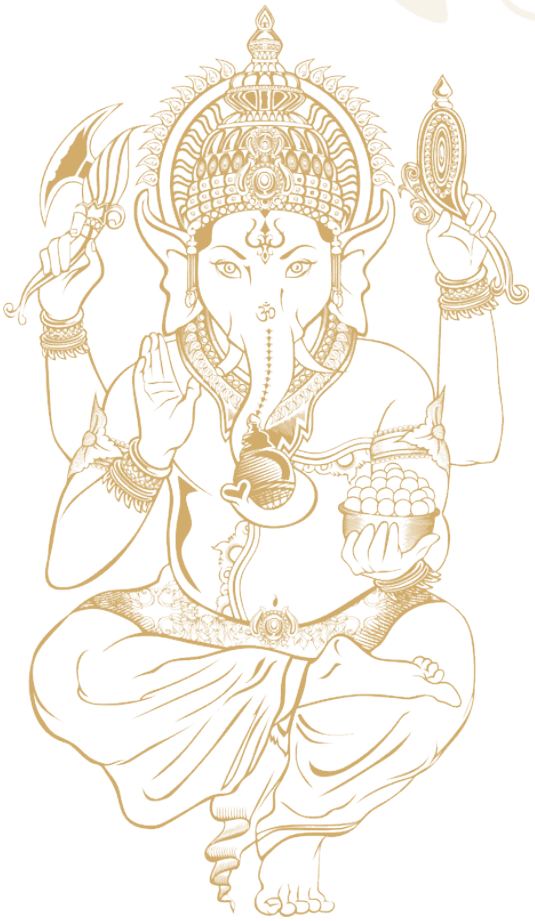

Naveen Diksha

Model: Web-FreeMatching

Order No: 119120603

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
07/11/1991	जन्म तिथि	02/01/1995
गुरुवार	दिन	सोमवार
घंटे 21:40:00	जन्म समय	22:56:00 घंटे
घटी 39:50:03	जन्म समय(घटी)	41:37:27 घटी
India	देश	India
Bhatpara	स्थान	Bikaner
22:51:00 उत्तर	अक्षांश	28:01:00 उत्तर
88:31:00 पूर्व	रेखांश	73:22:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे 00:24:04	स्थानिक संस्कार	-00:36:32 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
05:43:58	सूर्योदय	07:28:22
16:55:09	सूर्यास्त	17:52:30
23:44:51	चित्रपक्षीय अयनांश	23:47:27

विंशोत्तरी	अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी
शनि 16वर्ष 5मा 17दि	01:05:17	कर्क	लग्न	सिंह	24:29:08	सूर्य 2वर्ष 0मा 13दि
केतु	21:00:11	तुला	सूर्य	धनु	18:03:35	राहु
25/04/2025	05:06:48	वृश्चि	चंद्र	मक	05:28:35	15/01/2014
25/04/2032	21:13:29	तुला	मंगल	सिंह	08:52:41	16/01/2032
केतु 21/09/2025	10:44:05	वृश्चि	बुध	धनु	29:26:10	राहु 27/09/2016
शुक्र 21/11/2026	16:42:56	सिंह	गुरु	वृश्चि	11:17:10	गुरु 21/02/2019
सूर्य 29/03/2027	04:34:58	कन्या	शुक्र	वृश्चि	01:39:29	शनि 28/12/2021
चन्द्र 28/10/2027	07:22:29	मक	शनि	कुंभ	14:20:43	बुध 16/07/2024
मंगल 25/03/2028	17:29:31	धनु व	राहु व	तुला	19:14:11	केतु 04/08/2025
राहु 13/04/2029	17:29:31	मिथु व	केतु व	मेष	19:14:11	शुक्र 04/08/2028
गुरु 20/03/2030	17:05:41	धनु	हर्ष	मक	01:46:53	सूर्य 28/06/2029
शनि 29/04/2031	20:43:52	धनु	नेप	धनु	28:50:30	चन्द्र 28/12/2030
बुध 25/04/2032	26:19:24	तुला	प्लूटो	वृश्चि	05:47:16	मंगल 16/01/2032

लग्न-चलित

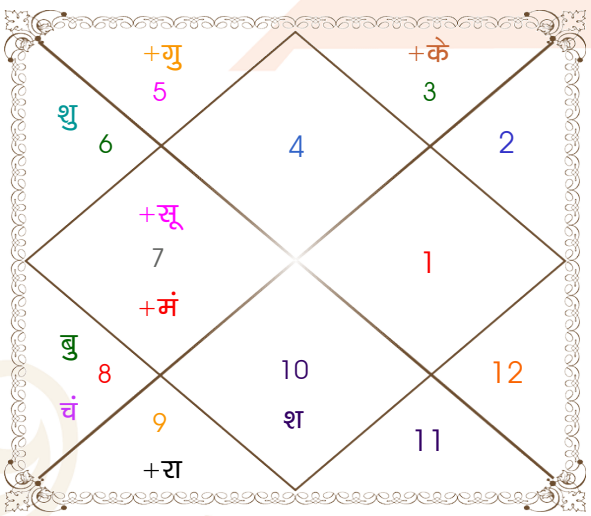

लग्न-चलित

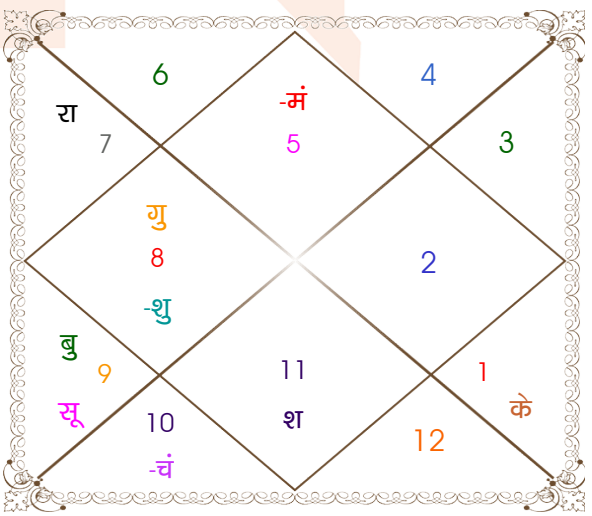

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	विप्र	वैश्य	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	कीटक	चतुष्पाद	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	साधक	प्रत्यारि	3	1.50	--	भाग्य
योनि	मृग	नकुल	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	मंगल	शनि	5	0.50	--	आपसी सम्बन्ध
गण	देव	मनुष्य	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	वृश्चिक	मकर	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	मध्य	अन्त्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	27.00		

Naveen का वर्ग सर्प है तथा Diksha का वर्ग सिंह है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार Naveen और Diksha का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

Naveen मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में चतुर्थ भाव में स्थित है।

Diksha मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में प्रथम भाव में स्थित है।

गुणबाहुल्ये भौमदोषो न विद्यते।।

यदि अधिक गुण मिलते हों तो मंगल दोष नहीं लगता।

क्योंकि अधिक गुण मिलते हैं अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु Diksha कि कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु Naveen कि कुण्डली में षष्ठ भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है। Naveen तथा Diksha में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।